रात्रि क्लास 21/12/68 :– हरेक सेन्टर को जितना चाहिए सर्विस का शो करे। जो बाप से सीखे हैं वह औरों को सुनावें। रचयिता और रचना का राज़ बताना है। जो भूले हैं वह बतानी हैं। बाप कहते हैं मैं जो हूँ, जैसा हूँ कोई मुश्किल ही जानते हैं। यह भी प्वाइंट्स है। कृष्ण तो ऐसा है नहीं जिसको कोई जान न सके। सारी सृष्टि भर में उनको जानते हैं। मोर मुकुट वाला है। फिर कृष्ण ऐसा है नहीं जिसको कोई जान न सके। फिर कृष्ण ऐसा क्यों कहे कि बिरला कोई जान सकते। ऐसी-2 प्वाइंट निकालनी हैं। बाबा ने क्या समझाया है। बाबा अक्षर बहुत मीठा है। यहाँ अच्छी रीत सुनते हैं; परन्तु माया भुला देती है। कहेंगे यह तो हमको सिखलाते थे फिर ट्रेटर बन पड़े हैं। हमको समझाने वाले को माया ग्राह ने खा लिया। बाप ने समझाया है तुम 21 जन्मों लिए पदमापदमभाग्यशाली बनते हो। फिर माया से हराकर देह अभिमान में आकर बाप को भूल अपनी सत्यानाश करते हो। तो दिल में आता है ना, समझावेंगे यह तो जानते हैं, जो ट्रेटर बनते हैं कल्प पहले भी बने हैं। जिनमें ज्ञान होगा वह ज्ञान देंगे। ज्ञान न होगा तो उल्टा ही सुनावेंगे। कोई भी प्रकार से कोई डिसरिगार्ड करते हैं तो अपने ही पाँव पर छूरे लगाते हैं ना। बाप तो आते हैं सदा सुखी बनाने। समझदार समझू ...हते हैं। बापदादा को भूल कब पढ़ाई को छोड़ नहीं सकते हैं, नहीं तो बेड़ा गर्क हो जावेगा। बहुत बच्चे समझते हैं बाबा को थोड़े ही मालूम पड़ता है। अरे, परन्तु तुम जो करते हो अपने ही पाँव पर कुल्हाड़ी मारते हो। आत्मा जानती है यह अच्छा काम है वा बुरा। हमको तो पूरा देहीअभिमानी बन बाप से वर्सा लेना है। देह-अभिमान में आने से धोखा खाया जाता है। अच्छे-2 को माया हप कर लेती है। एकदम पता नहीं पड़ता। समझ नहीं आती। माया अकल बिल्कुल ही चट कर देती है, नहीं तो स्टूडेन्ट लाइफ में टीचर से कोई दुश्मनी नहीं रखनी होती है। बाप कितनी अच्छी बातें बच्चों को उन्नति के लिए समझाते हैं। रोज़ जो समझाते हैं, कल्प-2 वही समझाते हैं। है ही कल्याणकारी बातें। कुछ न कुछ कल्याण जरूर भरा हुआ है। अन्दर खुशी रहती है हम यह जाये (ब)नेंगे। पढ़ाई छोड़ दे तो फिर बन न सकेंगे। फिर बाप का निन्दक ठौर न पाये। जैसे तकड़ा चढ़ते हैं वैसे उतरते भी हैं। ठीक पढ़ते नहीं हैं तो उनको समझाना चाहिए। रहमदिल बनना है ना। बाप भी समझाते हैं .... तुम क्या-2 करते थे। जिसको गाली देते रहते थे वही तुमको अभी पढ़ा रहे हैं। तो ऐसे बाप से बड़ी सम्भाल (र)खनी है। बाप समझाते हैं बहुत सहज है। मूल बात है कि विकार में नहीं जाना है। देह-अभिमान में नहीं ...ाना है। माया कुछ न कुछ पाप कराती है। न बताने से वृद्धि को पा लेते हैं। फिर पद भ्रष्ट हो जाते हैं। बाप (को) बहुत-2 याद करना है। बाबा बाबा करते हैं प्राण जायें। प्राण जब जायें तो बाप ही याद हो और

समझानी बहुत सहज है चक्र की, वह भी याद हो। बाबा जानते हैं माया अपोज़ीशन करेगी। बिल्कुल खबरदार रहना है। आधा को हराती है, हप कर जाती है। आधा पुरुषार्थ अनुसार अपना वर्सा पा लेते हैं। आधा को खा लेती है। बाप को बहुत प्यार से याद करो। इन जैसी प्यारी कोई चीज़ है नहीं। कोई प्राप्ति करा न सके। इस समय भक्ति का भी अन्त है; इसलिए उनका बहुत शो है। सभी का माथा फिरा हुआ है। बाप का ज्ञान कितना मीठा, शान्त बनाते हैं। हाँ, कोई चर्ये-खर्ये बन जाते हैं तो बड़ा धमचक्र मचाते हैं। उनको तकदीर खोटी कहा जाता है। नापास हो आते हैं। फेल बहुत होते हैं। अभी पता नहीं पड़ता है बच्चों को। ज्ञान लेते नहीं और नुकसान करते हैं। अन्दर सभा में छी-छी आकर बैठते हैं। आकर कुछ सुनते हैं; परन्तु कर्तव्य ऐसा उल्टा करते हैं, वह भी फेल हो पड़ते हैं। कितना घाटा पड़ जाता है। तुम बच्चों को खबरदार रहना चाहिए। बाप कल्प-2 आते हैं स्थापन करने तो वह जरूर स्थापन होगी। भगवान से कोई की दुश्मनी थोड़े ही होनी चाहिए। तुम सभी का कनेक्शन, लेन-देन शिवबाबा से है। यह तो ट्रस्टी है। एक तो अन्दर में बड़ी खुशी, बड़ा रिगार्ड रहना चाहिए। कितना अच्छी तरह से बाप बैठ समझाते हैं। एम ऑबजेक्ट कैसी रखी हुई है और प्वाइंट्स भी सभी देते रहते हैं। सहज बात है बाप की महिमा बताओ। कृष्ण के लिए भी क्लीयर समझाना है। वह पतित-पावन बाप, टीचर, गुरु नहीं बन सकता।

हरेक सेन्टर वाला छोटा वा बड़ा हो। समझाने वाला सो अच्छा हो। जो बाप समझाते हैं वह बैठ समझावे। नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार माना ही फर्स्ट, सेकण्ड, थर्ड। आज से 5000 वर्ष पहले भी हमको यही वर्सा मिला था। शिवरात्रि पर क्या समझाना है, हरेक सेन्टर वाले वह प्वाइंट निकाल लिखें तो धारणा भी होगी। खुशी का पारा चढ़ा रहेगा। बाप कहते हैं हम तुमको जो समझाता हूँ सो फिर औरों को समझाना है। बाबा कोई किताब आदि थोड़े ही उठाते हैं। यह अन्दर में प्रैक्टिस करो। बाप कहते हैं देह के सभी सम्बन्ध छोड़ मामेकम् याद करो तो तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जावेंगे। यूँ तो तुम रोज़ शिवजयन्ती मनाते हो। रोज़ बाप समझाते हैं जो अच्छी रीत धारणा करते हैं, वह बैठ समझावे। बड़े-2 चित्र फर्स्ट क्लास है। बाप समझाते हैं तुम पक्के बनो। यह ल॰ना॰ के चित्र अपने पास रख दो। घड़ी-2 याद पड़े हम बाबा के पास पढ़ने जाते हैं यह बनने लिए। तुम देखते रहना माया बड़ी बलवान है। बड़े दुश्मन का मुकाबला है। शिवरात्रि पर सभी समझाओ। हरेक प्वाइंट अलग-2 सो फिर बैठ लिखो। भल सभी टीचर को मँगाओ। टीचरें जो अपन को होशियार समझती हैं वह भी भल आये। खर्चा हुआ सो हर्जा नहीं। सभी अपना अनुभव सुनावें। शिवजयन्ती पर सभी अपना अनुभव सुनावेंगे। बाबा हमको क्या समझाते हैं। मुख्य है दिल्ली, नहीं तो माया फिर घड़ी-2 भुला देती है। माया ऐसी जबरदस्त है। 5 विकार बड़ा दुश्मन है। इन पर जीत पानी है। युद्ध कैसे करो सो बाबा इशारा देते हैं। याद करो, दैवीगुण धारण करो, बाकी पढ़ाई में क्या रखा है। इनको सहज योग, सहज ज्ञान कहा जाता है। अपनी पहचान भी देते हैं। मैं तुम्हारा बाप हूँ। कृष्ण को अगर बाप, टीचर, गुरु कह नहीं सकते हैं। ऐसे कहते-2 तुम्हारी विजय तो होनी ही है। कहा जाता है ना घोर अंधियारे में सोये पड़े थे। आसुरी दुनिया तो है ना। भक्तिमार्ग ने कितना गोडरेज़ का ताला लगा दिया है। सत्य को कुछ समझते ही नहीं। जो सुनते वाह-वाह, सत्-सत् करते रहते हैं। बन्दर की पूजा करते हैं ना। यह बन्दर भी बेहतर है मनुष्य से। मनुष्य तो बन्दर से भी बदतर है, तब तो जाकर माथा टेकते हैं। तुम समझा सकते हो मनुष्यों की क्या गति होती है। अच्छा। शिवजयन्ती जब तक आये बाबा की प्वाइंट्स निकलती ही रहेंगी। अकेले कोई आकर बात पूछेंगे, बाबा का इतना ध्यान नहीं जावेगा। मुरली में बहुतों को समझाने से अच्छा लगता है। बेहद का बाप हूँ ना। बाप को तो ऑटोमैटिक बच्चे ही याद आवेंगे। बच्चों को मुरली सुनाने में मज़ा आता है। मैं कोई प्राइवेट थोड़े ही पढ़ाता हूँ। सभी को पढ़ाता हूँ। बाबा का तो विचार-सागर-मंथन चलता रहेगा। सभी ड्रामा के बस है ना। अच्छा।

अच्छा, रूहानी बाप व दादा का यादप्यार, गुडनाइट। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते। शिवबाबा याद है?